

रेचल कोरी: एक प्रकाश जो झुका नहीं

16 मार्च 2003 को, गाजा पट्टी के दक्षिणी हिस्से में, एक बुलडोजर के नीचे धरती काँपी — और उसके सामने खड़ी थी एक 23 साल की अमेरिकी युवती, नारंगी सुरक्षा जैकेट पहने, मेगाफोन थामे, एक परिवार के घर की रक्षा के लिए अपनी आवाज़ बुलंद किए हुए। उसका नाम था **रेचल कोरी**।

उस दिन वह अकेली रेत पर खड़ी थी, लेकिन आत्मा में नहीं। उसके दिल में थे वे बच्चे जिनके साथ उसने खेला था, वे माँएँ जिन्होंने उसे खाना खिलाया था, वे परिवार जिन्होंने उसे अपने जीवन में शामिल किया था। वह मानती थी कि उसकी मौजूदगी मशीन को रोक देगी। ऐसा नहीं हुआ। जब वह आगे बढ़ी, उसने उसके शरीर को कुचल दिया। लेकिन वह उस चीज़ को कुचल नहीं सकी जिसके लिए वह खड़ी थी।

रेचल कोरी की हत्या सिर्फ बुलडोजर के वजन से नहीं हुई। वह अन्याय के वजन से मारी गई — और वह उसके रास्ते में खड़ी होकर मरी।

एक गवाह का निर्माण

रेचल एलियन कोरी का जन्म **10 अप्रैल 1979** को **ओलंपिया, वाशिंगटन** में हुआ — एक ऐसी जगह जहाँ बारिश, जंगल और शांत राजनीतिक चेतना है। बचपन से ही रेचल दूसरों के बोझ महसूस करती थी। वह जल्दी और बार-बार बड़े सवाल पूछती थी। दस साल की उम्र में उसने घोषणा की कि उसका लक्ष्य है “दुनिया से भुखमरी खत्म करना”। वह इससे बाहर नहीं निकली — वह इसमें और गहरे उतर गई।

द एवरग्रीन स्टेट कॉलेज में उसने वैश्विक विकास, साहित्य और राजनीतिक सिद्धांत पढ़ा। लेकिन रेचल को सिर्फ सिद्धांतों से ज़्यादा चाहिए था। वह अन्याय का सामना करना चाहती थी। जब उसे पता चला कि सैन्य कब्जे के तहत फ़लस्तीनी लोगों की पीड़ा — घरों को ध्वस्त करना, सीमाएँ सील करना, सपनों को चूर करना — वह सिर्फ संकट का अध्ययन नहीं करती। वह **चली जाती है**।

जनवरी 2003 में, रेचल गाजा पहुँची **इंटरनेशनल सॉलिडैरिटी मूवमेंट (ISM)** का हिस्सा बनकर — एक फ़लस्तीनी नेतृत्व वाला अहिंसक आंदोलन जो अंतरराष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को कब्जे वाले क्षेत्रों के दिल में स्वागत करता था।

वहाँ उसका दिल अपनी वजह पा गया। और गाजा को एक बेटी मिली।

गाजा: उसके विवेक की धड़कन

रेचल ने गाजा को सिर्फ देखा नहीं — वह **उसकी ज़िंदगी में दाखिल हुई**। वह **रफ़ाह** के लोगों के बीच रही, एक शहर जो घेराबंदी और नुकसान से दागदार था। वह उन फ़लस्तीनी परिवारों के साथ रही जिनके घरों को ध्वस्त करने की धमकी थी। उसने **अरबी** सीखी, बच्चों को स्कूल के काम में मदद की, पड़ोसियों के साथ रोटी बाँटी, और उन्हीं धूल भरी गलियों पर चली जहाँ टैंक छाए रहते थे।

रफ़ाह के लोगों ने उसे **मेहमान के रूप में नहीं**, बल्कि अपने में से एक के रूप में अपनाया। उसे प्यार से **“रशा”** कहा जाता था, और उसने दूरी नहीं रखी। वह शोक तंबुओं में बैठी। माँओं के लिए किराने की थैलियाँ उठाई। किसानों के साथ बुलडोजर से उजाड़े गए खेतों में खड़ी रही। उसकी मौजूदगी प्रतीकात्मक नहीं थी — वह **सच्ची** थी।

घर भेजी अपनी चिट्ठियों में उसने असहनीय अन्याय का वर्णन किया — और दुनिया की असहनीय चुप्पी का।

“मैं इस पुरानी, छलपूर्ण नरसंहार को देख रही हूँ,” उसने लिखा। “मैं एक ऐसी ताकत और उदारता की डिग्री भी खोज रही हूँ जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।”

रेचल समझती थी कि **एकजुटता** कोई नारा नहीं — वह बलिदान है। और वह इसके लिए तैयार थी।

अंतिम खड़े होना: एक गवाह को अमर बना दिया

16 मार्च 2003 को, रेचल कोरी रफ़ाह में **नसरल्लाह परिवार के घर** के सामने खड़ी थी। वह उनके साथ रही थी, उनकी मेज पर खाना खाया था, उनके छत के नीचे सोई थी। उस दिन, इज़राइली सेना ने **कैटरपिलर D9 बुलडोजर** भेजा उनका घर गिराने के लिए — जैसा उसने गाजा में सैकड़ों अन्य घरों के साथ किया था। रेचल आगे बढ़ी। उसने चमकीला नारंगी जैकेट पहना था और मेगाफोन से चिल्ला रही थी, खुले मैदान में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।

मशीन आगे बढ़ी। वह नहीं रुकी। जब वह पीछे हटी, रेचल का शरीर उसके नीचे पड़ा था — कुचला हुआ, निर्जीव, लेकिन हमेशा के लिए अमर में बदल गया।

इज़राइली अधिकारियों ने **उसके अवशेष जब्त कर लिए**। उसके बाद जो हुआ उसने दूसरा, शांत हिंसा किया — इस बार उसके परिवार पर। उनके अधिकारों या शोक का सम्मान किए बिना, इज़राइली अधिकारियों ने **रेचल के शरीर का पोस्टमॉर्टम उसके परिवार की सहमति के बिना किया**, फिर उसे जलाया, और ओलंपिया में उसके माता-पिता को सिर्फ़ उसकी राख लौटाई।

रेचल की माँ **सिंडी कोरी** ने बाद में इज़राइली अदालत में और अंतरराष्ट्रीय साक्षात्कारों में गवाही दी:

“पोस्टमॉर्टम के बारे में हमसे कभी सलाह नहीं ली गई। हमें बताया गया कि उसके शरीर को रिहा करने से पहले यह करना ज़रूरी है, लेकिन हमें नहीं बताया गया कब, कहाँ, किसने, या कि हमारी इच्छाओं को नज़रअंदाज़ कर दिया जाएगा।” — सिंडी कोरी, 2010 हाइफ़ा जिला अदालत गवाही और 2015 साक्षात्कार

यह अंतिम अपमान, बिना देखभाल या सहमति के किया गया, उसकी मृत्यु के अन्याय में एक परेशान करने वाला अध्याय बना हुआ है। इसने उसके परिवार को सबसे बुनियादी अधिकार से भी वंचित कर दिया — अपनी बेटी के शरीर को शांति, प्रार्थना और उपस्थिति के साथ संभालने का।

लेकिन **गाजा** में, उसकी आत्मा को **गरिमा** के साथ सम्मानित किया गया। वहाँ, रेचल को चुप्पी में दफनाया नहीं गया। उसे **शहीदा** के रूप में ऊँचा उठाया गया, एक शहीद। रफ़ाह की संस्कृति में, उन परिवारों की नज़रों में जिनकी रक्षा के लिए वह मरी, उसने सर्वोच्च नैतिक स्थिति हासिल की — हिंसा से नहीं, बल्कि **जीवन की रक्षा में बलिदान** से।

रफ़ाह के लोगों ने **प्रतीकात्मक अंतिम संस्कार** किया। उन्होंने उसकी तस्वीर को फ़लस्तीनी झंडों में लपेटा, उसकी याद को गलियों में ले गए, और कुरान की आयतें पढ़ीं, जो सदियों से उन लोगों के सम्मान में गूँजती हैं जो निर्दोषों की रक्षा में मरते हैं:

“और कभी यह न सोचो कि जो अल्लाह के रास्ते में मारे गए हैं, वे मुर्दा हैं। बल्कि वे अपने رب के पास ज़िंदा हैं, रोज़ी पा रहे हैं, खुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी कृपा से दिया है, और वे उन लोगों के बारे में अच्छी खबर पाते हैं जो उनके बाद [शहीद होंगे] जो अभी तक उनके साथ नहीं जुड़े — कि उनके लिए कोई डर नहीं होगा और न वे दुखी होंगे। वे अल्लाह की कृपा और इनाम की अच्छी खबर पाते हैं और इस बात की कि अल्लाह ईमान वालों का बदला व्यर्थ नहीं करता।” (सूरह आल-इमरान 3:169-171, सहीह इंटरनेशनल)

हालाँकि रेचल कोरी मुस्लिम नहीं थी, **शहादत की आत्मा** — मृत्यु तक सत्य को अपनाना — उसमें पूरी तरह जीवित थी। उसका शहीद होना **गाजा के लोगों द्वारा न केवल स्वीकार किया गया; इसे पवित्र किया गया**। उसका नाम उन लोगों की पवित्र सूची में शामिल हो गया जिन्होंने न्याय, गरिमा और दूसरों के लिए अपनी जान दी।

एक परिवार जो भूल नहीं सका

रेचल के माता-पिता **क्रेग और सिंडी कोरी** अपने दुख में अंदर की ओर मुड़ सकते थे। इसके बजाय, उन्होंने उद्देश्य के साथ बाहर की ओर मुड़ गए। उन्होंने **रेचल कोरी फाउंडेशन फॉर पीस एंड जस्टिस** की स्थापना की, न कि अतीत का स्मारक,

बल्कि **भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता** के रूप में।

वे अदालतों, सरकारों और विश्वविद्यालयों के सामने खड़े हुए — अपनी बेटी के लिए और उन लोगों के लिए न्याय की माँग करते हुए जिनके साथ वह खड़ी थी। 2012 में, एक इज़राइली अदालत ने उसकी मृत्यु को “दुर्घटना” करार दिया, राज्य को बरी कर दिया। लेकिन क्रेग और सिंडी का मिशन कभी नहीं डगमगाया।

आज तक, वे **फ़लस्तीनी अधिकारों की रक्षा में व्यक्तिगत रूप से शामिल** हैं, चुप कराए गए लोगों की आवाज़ को बढ़ाते हैं, उन रास्तों पर चलते हैं जो रेचल ने चलाए थे, और उस सत्य को जीते हैं जिसके लिए वह मरी: कि न्याय किसी एक राष्ट्र, एक विश्वास या एक लोगों का नहीं है — यह सार्वभौमिक विरासत है।

उनकी बेटी ने अपनी जान नहीं खोई। उसने **उसे दी**, स्वतंत्र रूप से।

वह प्रकाश जो उसने पीछे छोड़ा

रेचल कोरी का नाम अब गाजा भर में दीवार चित्रों में जीवित है। स्कूल उसके नाम पर हैं। बच्चों को उस अमेरिकी के बारे में पढ़ाया जाता है जो उनके लिए खड़ी हुई जब कुछ ही लोग ऐसा करते थे। उसे कविताओं, फिल्मों और जागरणों में याद किया जाता है। नाटक **माय नेम इज़ रेचल कोरी**, उसकी चिट्ठियों और डायरियों से संकलित, ने दुनिया भर में दर्शकों को आँसुओं तक पहुँचाया है।

लेकिन उसकी असली विरासत **कला या स्मृति में नहीं** है — वह उस जीवित विवेक में है जिसे उसने दूसरों में जगाया। उसने हज़ारों को प्रेरित किया कि वे दमन की व्यवस्थाओं में अपनी भूमिकाओं पर सवाल उठाएँ, कब्जे और विस्थापित लोगों के साथ एकजुटता में खड़े हों, और याद रखें कि **एक अकेला व्यक्ति**, अगर सत्य उसका मार्गदर्शन करे, **अन्याय की दीवार के सामने खड़ा हो सकता है**।

फ़लस्तीनियों के दिलों में, रेचल कोरी कोई प्रतीक नहीं, बल्कि **बहन** बनी हुई है — वह जिसका प्यार महासागरों को पार कर गया और जिसका त्याग उसे धर्मियों की पीढ़ियों से जोड़ दिया।

निष्कर्ष: गवाह जिसे चुप नहीं किया जाएगा

बीस साल से ज़्यादा बीत गए, लेकिन रेचल कोरी का नाम अभी भी गूँजता है — शरणार्थी शिविरों, कक्षाओं, विरोध प्रदर्शनों और प्रार्थनाओं में। वह सैनिक नहीं थी, राजनयिक नहीं, राजनीतिज्ञ नहीं। वह एक इंसान थी — निडर, सिद्धांतवादी, और प्रेम से भरी हुई।

वह गाजा खुद के लिए नहीं आई। वह **उनके लिए** आई। और वह रुकी रही।

“जो एक जान बचाता है,” कुरान घोषणा करता है, **“वह मानो पूरी इंसानियत को बचा लेता है।” (सूरह अल-माइदा 5:32)**

रेचल कोरी ने कई लोगों को बचाने की कोशिश की — हिंसा से नहीं, बल्कि अपनी मौजूदगी से। उसे डर से चुप नहीं किया गया। वह दमन के इंजनों के सामने नहीं झुकी। और हालाँकि उसका शरीर टूट गया, उसकी गवाही अटूट बनी हुई है।

रेचल कोरी चली नहीं गई।

वह **जीवित** है — स्मृति में, आत्मा में, हर उस साहसिक कार्य में जो उसके बाद आता है। वह अपने रब के पास जीवित है, शहीदों के बीच, उस प्रकाश में आनंदित होकर जिसकी ओर वह चली थी।

वह खड़ी हुई, गिरी, और उठी — **हमेशा के लिए**।

संदर्भ

- Corrie, Rachel. **Let Me Stand Alone: The Journals of Rachel Corrie**. संपादक सिंडी कोरी और क्रेग कोरी। न्यूयॉर्क: डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी, 2008.
- पवित्र कुरान। अनुवाद सहीह इंटरनेशनल। जेद्दा: अबुल-क्रासिम पब्लिशिंग हाउस, 1997.
- इंटरनेशनल सॉलिडैरिटी मूवमेंट। **“रिमेंबरिंग रेचल कोरी.”** बयान और चश्मदीद गवाहियाँ, 2003.
- ह्यूमन राइट्स वॉच। **“इज़राइल: अमेरिकी प्रदर्शनकारी की मृत्यु की जाँच करें.”** प्रेस विज्ञप्ति। 17 मार्च 2003.
- एमनेस्टी इंटरनेशनल। **“इज़राइल/कब्जे वाले क्षेत्र: रेचल कोरी की मृत्यु की जाँच होनी चाहिए.”** सार्वजनिक बयान। 18 मार्च 2003.
- संयुक्त राष्ट्र मानवीय मामलों के समन्वय कार्यालय (UNOCHA)। **“रफ़ाह विध्वंस: अवलोकन और मानवीय प्रभाव.”** गाजा पट्टी फ़ील्ड अपडेट, 2003.
- कोरी बनाम इज़राइल राज्य। **हाइफ़ा ज़िला अदालत का फैसला।** केस 371/05। 28 अगस्त 2012.
- इज़राइल सुप्रीम कोर्ट। **कोरी बनाम इज़राइल राज्य अपील पर निर्णय।** केस 8573/12। 12 फरवरी 2015.
- रिकमैन, एलन, और कैथरीन विनर, संपादक। **माय नेम इज़ रेचल कोरी।** लंदन: निक हर्न बुक्स, 2005.
- रेचल कोरी फाउंडेशन फॉर पीस एंड जस्टिस। **मिशन स्टेटमेंट और सार्वजनिक वकालत सामग्री।** ओलंपिया, WA, 2003-वर्तमान।